International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 01(III), January - March, 2023, pp. 178-188

परसाई साहित्य की भाषिक संरचना और शिल्प

डॉ. मोहन लाल शर्मा*

प्रस्तावना

व्यंग्यकार में व्यंग्य उत्पन्न करने की सफलता का सबसे बड़ा राज उसकी भाषा में ही हुआ करता है। भाषा के सफल प्रयोग द्वारा ही वह लक्ष्य पर अधिक से अधिक सटीक प्रहार करने में समर्थ हो पाता है। गद्य और पद्य की दीवार, अभिव्यक्ति और अनुभव की हदबन्दी और भाषात्मक साधनों की नकली साहसिकता को छिन्न–भिन्न कर आक्रोश की भाषा नए मुहावरों और गारिमापूर्ण व्यंग्यात्मक उपचारों को लेकर उभरी है। यह व्यंग्यात्मक ''ओवरटोन'' और ''अंडरटोन'' की खूबियों और खामियों से अच्छी तरह परिचित है। इसी कारण परसाई जी की व्यंग्यभाषा केवल तल्ख जुमल नहीं निगलती, अपितु वास्तविक तल्खी के बीच आक्रोश की प्रयोजनमुखी तलाश को सहज व्यंजना के धरातल पर पेश करती है।

डॉ. सुरेन्द्र चौधरी के अनुसार–''आक्रोश की भाषा न पिंगल के नियम कानून मानती है और न मध्यवर्ग के संस्कारो को, वह ''वायलैन्स'' की भाषा होती है, प्रहार करना उसका अनिवार्य गुणधर्म बन जाता है।''

हरिशंकर परसाई जी का व्यंग्यभाषा न तो दिखावटी भद्रता से चिपकी रहती है और न नकली साहसिकता का मुखौटा ओढ़कर आगे बढ़ती है। यह न कोई अगम्या भाषा है। और न हमेशा युद्धोन्मुखी चुस्तबयानी ही है। अनेक अवसरो पर व्यंग्य भाषा एकदम शान्त और स्वस्थ गति का परिचय भी देती है तो उसके लोहे को ठंडा रहना चाहिए, तभी वह मर्मघाती साबित हो सकेगी। कहने का तात्पर्य यह है कि व्यंग्य भाषा विरोधी विशिष्टिताओं का समुच्चय है।

परसाई जी ने जीवन और जगत की गहरी पकड़ के साथ भाषा की बारीकियों की पहचान का भी ध्यान रखा है। इन्होंने भाषा प्रयोग के प्रति अत्यन्त सजगता व्यक्त की है, उनकी भाषा में धारदार और पैनी, तीखापन का प्रयोग इतना की लक्ष्य पर सीधे प्रहार करती है। इन्होंने अपने युग और समय की विकृतियों तथा विसंगतियों पर प्रहार के उद्देश्य से ही व्यंग्य भाषा का प्रयोग किया है जो पूर्णतरू सार्थक और विषयानुकुल है। इनकी भाषा अभिजात संस्कारों से पूर्णतरू मुक्त और साधारण जन–जीवन में प्रचलित भाषा है। सरल और धारदार है साथ में उसमें कलात्मक अभिव्यक्ति की अद्‌भुत क्षमता है। वाक्य अधिकाशंतरू छोटे–छोटे सीधे और सरल होते हैं। व्यंग्य भाषा का उदाहरण देखिए–''लड़की छज्जे पर आई। इतना लम्बा चौड़ा और गहरा सिन्दूर मांग से भरा था। मील भर से दिखती थी। घर के सामने भीड़–सी लग गई। राहगीर पूछते– क्या बात है ? कोई मौत हो गयी क्या ? दूसरे राहगीर ने कहा –हाँ लगता है कि कोई मौत हो गयी है। तभी मौहल्ले के एक मसखरे ने कहा– एक नहीं चार – पाँच मौत हो गयीं है।''

परसाई की यह विशेषता रही है कि जिस समाज और आदमी का चित्रण होता है तो भाषा भी उसी के अनुरूप होती है। इसमें सड़कों गलियों, ऑफिस–कारखानों खेतों–खलिहानों के जन–जीवन की खालिस देशी बोली के तेवर है, उसी के कहावत और मुहावरें हैं और उनकी इस भाषा ने न केवल हिन्दी गद्य का मिजाज बदला है बल्कि पूरे तेवर और मुहावरें को जिन्दादिली और मर्दाना बनाया है। हिन्दी गद्य के देसी मिजाज और

* भाषा–संपादक, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, राजस्थान।

तेवर के लिए जिस तरह भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और बालकृष्ण भट्ट, बालमुकुन्द गुप्त और प्रतापनारायण मिश्र को याद किये जाते हैं, उसी तरह परसाई जी की गद्य भाषा भी अनुगूँजों और आघातों के लिए याद किया जाता रहेगा। भाषा के इसी तात्कालिक असर की वजह से इनकी कहानियों, निबन्धों, या अन्य विधाओं के पाठको का दायरा इतना बड़ा है और वो इतनी लोकप्रिय हैं। उनकी बातें और विचार पाठकों की चेतना और तमीज का हिस्सा बन जाते हैं और जिस प्रकार लोग लोक कथाओं से अपने अनुभव और बात की पुष्टि करते हैं उसी तरह परसाई के साहित्य से काम लेते हैं।

भाषा विचारों की वाहिका है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है जो अपनी वाणी के द्वारा अपने अन्य साथियों के साथ एक व्यवस्थित भाषा में अर्थपूर्ण वाग् व्यवहार करता है। अभिव्यक्ति के विभिन्न साधनों में वाणी ही सबसे प्रबल साधन है, जो सप्रयत्न उच्चारित ध्वनि के अर्थ प्रतीकों (शब्द, पद और वाक्य) द्वारा भाषा रूप में प्रगट होकर मानव समाज का विकास तथा उसकी सभ्यता और संस्कृति को संसृत और सुरक्षित करती हुई उसकी भावी पीढ़ी का भी संस्कार करती रहती है। हरिशंकर परसाई जी ने अपनी भाषा को अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया है जिसके द्वारा मानव मन में उद्भूत प्रेम, करुणा, हर्ष, शोक, घृणा, क्रोध आदि मनोभावों की अभिव्यक्ति को बल मिलता है। मनुष्य समाज की अभिन्न इकाई है, समाज उसके विकास की सहायक संस्था है और वाणी या भाषा उसकी अभिव्यक्ति का माध्यम।

परसाई जी ने भाषा को मधुर भी माना है और कठोर भी, वह अगम भी है और सुगम भी। तुलसीदास की यह चौपाई व्यंग्यभाषा की परिभाषा को पूरी तरह रेखांकित करती है–

''सुगम अगम मृदु मंजु कठोरे।
हरथु अमित अति आखर थोरे।।''

थोड़े अक्षरों में भी अमित अर्थ सम्प्रेषित करने की क्षमता ही परसाई जी की भाषा की अन्तिम सम्पदा नहीं है, अपितु शैली के स्तर पर भी एक वैभवशाली चित्रशाला है। प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से अपनी बहुधर्मिता दर्शाती हुई व्यंग्यभाषा अपने शैलीय उपकरणों के कारण रचना और सन्दर्भ में प्रवेश का रास्ता सुकर बनाती है। इसी कारण परसाई जी के व्यंग्य लेखन की अभिव्यंजकता और प्रभावी भाषाप्रकार्य की सारी बुनावट विशिष्ट शैलीगत उपकरणों पर ही आधृत है।

भाषिक संरचना मे हर एक उपकरणों का सफलता के साथ परसाई जी ने प्रयोग किया है। शब्द, वाक्य, अलंकार आदि का सफल प्रयोग किया है।

शब्द योजना

भाषा में शब्द ही अर्थ का वाहक है। अर्थ बुद्धि में स्थित रहता है। उसी अर्थ की अभिव्यक्ति के लिये ध्वनि स्फोट होती है और अर्थ का वहन करता हुआ शब्द गूंज उठता है।

भर्तृहरि के अनुसार "शब्द अर्थ का कारण है और बुद्धिस्थ अर्थ शब्द का कारण है। शब्द से अर्थ और अर्थ से शब्द की प्रतीति होती है। शब्द से पूर्ण अर्थ की अभिव्यक्ति तभी होती है जबकि लक्ष्यार्थ (बुद्धिस्थ अर्थ) के लिए उसका प्रयोग हो और उस अर्थ की अभिव्यक्ति में वह समर्थ हो जाय।''

शब्द अर्थ की प्रतीक भी है और अर्थ का वाहक भी है। शब्द किसी वस्तु परिस्थिति क्रिया आदि का द्योतक है और वह वक्ता की बुद्धि में स्थित अर्थ के अनुसार वाक्य में पदस्थ होकर उक्त अर्थ की द्योतक (प्रतीक और वाहक) हो जाता है।

शब्द भाषा की, सम्पत्ति है। भावाभिव्यक्ति का एकमात्र साधन यदि कोई वस्तु है तो वे शब्द हैं। लेखक अथवा वक्ता का शब्दकोष ही उसके ज्ञान की वह राशि है कि जिसके बल से वह पत्थर को मोम बना सकता है, पानी को पाषाण में परिवर्तित कर सकता है। कर्मण्य को अकर्मण्य और अकर्मण्य को कर्मण्य बना सकता है। आदि युग से आज तक मानव जो कुछ भी ज्ञान सन्निहित कर कर्मण्य बना सका है वह सब शब्दों के रूप में ही आज संसार के पास सुरक्षित है। शब्द लेखक की शक्ति है, व्याकरण की प्राण है भाषा विज्ञान की निधि और भाषा के क्रमिक विकास की रूपरेखा है।

"एक या एक से अधिक ध्वनियों के समुदाय को शब्द कहते हैं जिनका कुछ न कुछ अर्थ निकलता हो।''

परसाई जी के लेखन में व्यंग्य उत्पन्न करने की बहुत कुछ क्षमता उसकी भाषा पर निर्भर करती है। उन्होंने कहीं कहीं संस्कृत के तत्सम शब्दों के प्रयोग के साथ तद्भव, देशज तथा उर्दू–फारसी तथा अंग्रेजी के शब्दों के कहीं–कहीं वाक्य खण्डों का प्रयोग दिखाई देता है।

परसाई जी ने शब्द–योजना के सभी रूपों का भरपूर प्रयोग अपने व्यंग्य निबन्धों में किया है। इनके शब्द–समूह की योजना को हम इस तरह शीर्षकों के रूप में बाँट कर प्रस्तुत कर सकते हैं–

- **तत्सम शब्द**–'तत्सम' शब्द का अर्थ है उसके समान तत् + सम। संस्कृत के मौलिक शब्द जो विभिक्तियों तथा उसके व्याकरणिक रूपों का परित्याग करके हिन्दी में प्रचलित हो गये हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं।

परसाई जी के साहित्य में अनेक तत्सम शब्दों का प्रयोग हुआ है उदहारण के लिए– अभय, उभय, अध्ययन, अलि, अश्रु, अस्त्र, अथक, इति, इतर, उद्धत, अधि, अवधि, आदि द्रव्य, दंश, निर्झर, नेठि, निमित्त, ऋतु, सखा, पिता, भ्राता, जामात, दाता, सम्राट, आत्मा, ब्रह्मा, युवा, हस्ती, मित्र, कुसुम, पत्र, पुष्प, देश, बालक, वृक्ष, कर्म भक्ति, क्षेत्र, मेघ, मधुर वायुयान, निदेशक, लघुशंका, शिशु, सारल्य, सुजलां सुफलां, उपन्यास, तत्वाधान, कुशल, काल, जन्तु, दण्ड, सुकृत, शूकर, विकट, सर्ग, शर्व, शुचि, शची, सुत, सूत, सूची, शती, अनेक ऐसे तत्सम शब्द हैं जिनका अन्त नहीं है। कहीं–कहीं तो पुरा वाक्य ही तत्सम शब्दों से भरा पूरा है।

- **तद्भव**–(तत्+भव) का अर्थ है उससे अर्थात संस्कृत से उत्पन्न शब्द। वस्तुतः हिन्दी के वे शब्द जो लोक जीवन में व्यवहृत होने के कारण अक्षर या वर्ण का परित्याग कर हिन्दी में प्रचलित हो उठे हैं, तदभव कहे जाते हैं।

परसाई का निबन्ध संग्रह चाहे बेईमानी की परत हो या वैष्णव की फिसलन या अन्य सभी में तद्भव की भरमार है। जैसे आप, नैना, पोखर, हिया, दीठ, कंघा, जीभ, हाथ, जल कोयल, रास्ता, मनुष्य, शराब, रत्न, पत्थर, ताकत, महक, गन्ध, बादल, बगल, महादेव, वीर, बैल, टुकड़ा, खण्ड, मैला, निष्ठा, सात, सूअर, मस्तक, कठिन, डर, कामना, चकित, शूर, तेजस्वी, सास, दादी, मूँछ, चोटी, ललाट, चीनी, अनेक शब्द हैं।

कहीं तो लम्बे–लम्बे सूत्रों के रूप में भी तद्भव शब्दों का प्रयोग किया है।–''चाँदेर हाँसि बाँध में गछे उछले पड़े आली, ओ प्रियतम ! तुमि लात घूँसा मारो।''

''कौन ठगवा नगरवा लूटल हो।''

अनेक ऐसे निबन्ध, कहानी या अन्य लेख हैं जिनमें परसाई की तद्भव शब्दावली का मिश्रण मिलता है।

- **देशज**–इन शब्दों की व्युत्पत्ति और व्याकरणिक रूप संस्कृत में नहीं मिलते हैं। डॉ. भोलानाथ तिवारी का मत है कि देशज कहे या माने जाने वाले शब्द देशज ही हों यह आवश्यक नहीं है। जैसे परसाई जी के प्रयोग किए इन शब्दों को देखिए–गड़बड़, घपला, चपत, झंझट, झगड़ा, टट्टू, तेन्दुआ पठा, धब्बा, पेड, गोड़, खिड़की, पान रुई, कौडी, झगड़ा आदि शब्दों को लिया जा सकता है।

बक–बक, भड़–भड़ और बकबक चकचक गर्रगर, 'काखाँ', 'हुज्जत', 'हराम', 'फतव', 'सफर', 'न जमकर जैरामजी' आदि

इनके निबन्धों की यह विशिष्ट विशेषता है कि भाषा अत्यन्त सरल और सुबोध होते हुए भी इनमें बीच–बीच में गजब की वक्रता दिखाई देती है।

- **विदेशी शब्द**–विजातीय भाषाओं के शब्द जो सामाजिक और भाषायी संसर्ग के कारण हिन्दी में प्रविष्ट हो गये हैं विदेशी शब्द कहे जाते हैं। भारत में समय–समय पर विदेशी शब्दों का आगमन हुआ है। अतः सभी विदेशियों की शब्दावली हिन्दी भाषा में पाई जाती है। विदेशी शब्दों में परसाई जी ने मुख्यतया निम्नलिखित शब्दों का अपने निबन्धों में प्रयोग किए हैं–

- **पश्तो शब्द**–अटेरन, बकलोल, मटरगस्ती, गुण्डा, आचार, डेरा, गटागट, जमालगोटा, हमजोली, लुच्चा, अटकल, भड़ास आदि हैं।
- **तुर्कीशब्द**–आका, चाकू, चिक, तमगा, दरोगा, बावर्ची, मुचलका, सौगात, बहादुर, कैंची, काबू कुली, तोपची, बेगम, चम्मच, तगार, लाशा, बीबी, बाबा, बुलाका, चेचक, कातेल, गनीमत
- **फारसी**–अरबी शब्द– इन शब्दों को विषय की दृष्टि से हम निम्नांकित भागों में विभक्त कर सकते हैं जो परसाई जी की शब्द–योजना की प्रयुक्तता की सार्थकता को अभिव्यक्त करते हैं–
  - **धर्मप्रधान शब्दावली**–रोजा, नमाज, दीन, कुरान, खुदा, हज, फरिश्ता, औलिया, सुन्नत, सुन्नी, नवी, पैगम्बर, मजहब, मजहब, हदीस, वली, शिया आदि।
  - **स्थान विषयक शब्द**–देहात, शहर, परगना, कूचा, मुहल्ला, जिला, कस्बा या कस्बाती।
  - **शासन विषयक**–सरकार, तहसीलदार, सदरआना, चपरासी, वकील, दीवानी, मुन्शी, खजान्ची, हाकिम, इजलास, सिपाही अमीन, आदालत।
  - **पोशाक सम्बन्धी**–पजामा, कमीज, मोजा, जुराब, दस्ताना, साफा, शलवार आदि।
  - **मकान सम्बन्धी**–बुनियादी दीवार दरवाजा, दालान मंजिल, मियानी, शीना, तहखाना, बरामदा, ताक और गरी
  - **चिकित्सा सम्बन्ध**–नब्ज, हकीम, बुखार, बवासरी, बदहजमी, दव, मरीज, मर्ज, सूजाक, लकवा, नजला, नासूर, जुलाब, हैजा आदि।
  - **श्रृंगार, पत्र व्यवहार, सेना तथा व्यावसायिक सम्बन्धी**–इत्र, सुर्मा, साबुन, आईना, हजामत, शीश, हिना, खत, लिफाफा, पता और हरकारा, फौज, जमादार, हवलदार, हमला, सगीन, तीर–कमान, दर्जी, सराफ, सईस, जीनसाज, बागवान, रफूगर, बेलदार, बावर्ची इत्यादि।

इनके अलावा भी सैकड़ों ऐसे शब्द है जिनके बिना भाषा में विलक्षणता तथा चमत्कार पैदा ही नहीं होता – यथा – आसान, ईमानदार, बदनाम, बारीक, दिलेर, बेकाम, कम–ज्यादा, सख्त, नरम, गरम, बेशक, आंशिक, शायद, हर्गिज, अखबार, बेहद, हस्तक्षेप, घपला, लिबास, वसूल बाकायदा उस्ताद, दाँवपेच, शिकायत, बेमिसाल नफरत हुकुमत, कम्बख्त, सिनेमा, हुज्जत, हराम, फतवा, सफर, बुलबुले, गुल, मौज न पाने" कितने उर्दू अरबी, फारसी के शब्द भरे पड़े हैं जिनका कोई अन्त नहीं है।

- **पुर्तगाली शब्द**–अलमारी, आलपिन, आया, इस्त्रू, अनन्नास, अलकतरा, कनस्तर, कमरा, काज, काफी, काजू, काकातुआ, गमला, कोको, बटन, क्रिस्तान, बेला, गो, बादाम चाबी, गोदाम, काजू, काफी, चाय, जंगला, तम्बाकू, तौलिया, पपीता आदि।
- **अंग्रेजी शब्द**–अंग्रेजी शब्द अंग्रेजों के शासन और घनिष्ठ प्रभाव व सम्पर्क के कारण हिन्दी में आये हैं। अंग्रेजी शब्दों की संख्या भी परसाई के निबन्धों में प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। यथा इंजन, मोटर, कैमरा, ग्रामोफोन, रेडियो, मशीन, मीटर, टेलीविजन, टाइपराइटर, टेपरिकार्डर, टेलीप्रिन्टर, बस लारी, ट्रेन, ट्रक, टेम्पो, रिक्शा, स्कूटर, कार, साईकिल, इसी तरह अंग्रेजी शब्दावली की एक झडी सी इनके निबन्धो में मिलती है। यथा– आपरेशन, अस्पताल, डॉक्टर, नर्स, कम्पाउडर, बीबी, कालम, निमोनिया, टिंचर, पुलटिस, ऐलोपेथी, सर्जरी, सर्जन, हिस्टीरिया। शिक्षा सम्बन्धी–रीडर, प्रोफेसर, अध्यापक, बुक, बाईडिंग, स्टेशनरी, फाउन्टेन पेन, इंक, चांसलर, वाइस, एम. ए., पी.एच. डी., डी. लिट आदि शर्ट, बुशर्ट, टाई, नेमटाई, फ्राक, पॉकिट, बूली, सिल्क, कॉटन, हैन्डलूम, खादी, नायलॉन, टेरिकॉट

शासन और न्याय सम्बन्धी अनेक शब्द हैं–कोर्ट, हाईकोर्ट, सुप्रीम कोर्ट, इन्सपेक्टर, कमिश्नर, कलेक्टर, एडवोकेट, जज, गजट, मिनिस्टर, अफंसर, वारन्ट, रिपोर्ट, अपील, जस्टिस आदि हैं।

संक्षेप में कह सकते हैं कि परसाई जी अनेक शब्दों को अपने निबन्धों में कहानियाँ, उपन्यासों में स्थान दिया है।

शब्द–शक्तियाँ

शब्द के विस्तृत अर्थ में वाणी का समस्त व्यापार समाहित होता है। शब्द तथा वाक्यों की सार्थकता अर्थ में होती है। जिस वृति या व्यापार द्वारा अर्थ का बोध होता है वह शक्ति कहलाती है। लोक व्यवहार में प्रयुक्त शब्द का कुछ न कुछ अभिप्रेत होता है। यही अभिप्रेत अर्थ शब्द के जिस गुण द्वारा संकेतित, लक्षित या व्यंजित होता है, उसे शब्द शक्ति कहते हैं। इन शब्द शक्तियों के प्रयोग से काव्य में रसनीयता विशिष्टता, और वक्रता का समावेश हो जाता है। इनका प्रयोग काव्य कथ्य को संप्रेष्य बनाने में भी सहायक होता है। शब्द शक्तियों का प्रयोग परसाई जी ने अपने साहित्य में अभिव्यंजनात्मक, चित्रात्मकता तथा अन्य रोचकताओं को बनाये रखने के लिये किया है। सीधे कथन में न तो वह मार्मिकता होती है, जो ह्रदय को छू सके और न गहराई होती है।

परसाई जी के निबन्धों में शब्द शक्तियों का भण्डार भरा पड़ा है हिन्दी साहित्य में प्रयुक्त अभिधा, लक्षणा और व्यंजना शक्तियाँ मानी गई हैं।

अभिधा – प्रचलित अर्थ का बोध कराने वाली शक्ति को ही अभिधा कहा जाता है अर्थात – जिस शक्ति के द्वारा शब्द से वाच्यार्थ का बोध होता है।

कुछ उदाहरण देखिए जो परसाई की अभिधा को व्यक्त करते हैं–

''तुम एकदम से सव्यान्वेषी कैसे हो गए? क्या दफ्तर में पैसों का कोई गोलमाल किया है?''

''तुम्हारी काँख में दबी उस पोटली में क्या है ब्राह्मण देवता ? स्वर्ण ?''

दो कविताएं देखिए जिससे परसाई जी की अभिधा सीधी अभिव्यक्ति मिलती है–

''स्वागत अकाल। स्वागत अकाल
भारत के गौरव के प्रतीक
गांधी के सपने के प्रतीक
गोदामों में रख सुरक्षित
हरित क्रान्ति के प्रिय प्रतीक
मनु भी करते बैठे जुगाल।
स्वागत अकाल। स्वागत अकाल।
मामी बोली मामा से देखों, रोटी तो बिल्ली निगल गयी,
मामा बोले रोटी वापस लेने को, तुम निगलो बिल्ली को तुरन्त।''

स्पष्ट ही वाच्यार्थ बोधक व्यापार को ही अभिधा कहते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि अभिधा साहित्य का आधार है पूरा लेखन इसके माध्यम से निकलता है।

- **लक्षणा**–अभिधा तो सीधा कथन करती है पर लक्षणा साहित्य में चारुता, मधुरता वक्रता और अतिरिक्त अर्थवक्ता भर देती है। मानव की मूल आवश्यकताओं ने भाषा–निर्माण के साथ ही वाचक शब्दों और अभिधा शक्ति को उत्पन्न किया, किन्तु उसकी भाव प्रवणता तथा सौन्दर्य दृष्टि ने वाचक शब्दों से सन्तोष न करके लक्षक अर्थों के रूप शब्द का प्रयोग किया।

जब शब्दों का वाच्यार्थ क्रम (वाक्य रूप) में प्रयोग न करके उससे सम्बन्ध रखने वाले किसी लक्ष्यार्थ के रूप में प्रयोग किया जता है तो उसे ''लक्षक'' कहा जाता है। इस शब्द– शक्ति के प्रयोग के लिए चार बातें आवश्यक हैं–

- मुख्य अर्थ के ग्रहण में असंगति लगती हो।
- मुख्यार्थ से भिन्न अर्थ की प्रतीति।
- भिन्न अर्थ का मुख्य अर्थ से सम्बन्ध होता है।
- मुख्यार्थ के मूल में रूढ़ि का प्रयोजन।

जैसे – मोहन गधा है – इस वाक्य में "गधा" शब्द लक्षक है– क्योंकि इसका वाच्यार्थ तो यहाँ असंगत है – मनुष्य जानवर विशेष कैसे हो सकता है अतः गधा शब्द मूर्खता को प्रकट करता है। परसाई के निबन्धों में जगह–जगह लक्षणा शब्द शक्ति का प्रयोग हुआ है या किया है –

देखिए कुछ उदाहरण–

''हनुमान राजनारायण् अपने राम को अहिरावण की कैद से छुड़ाकर फिर कंधे पर बिठाकर ला सकता है।''

''चौधरी चरणसिंह रेडीमेट और स्थायी राष्ट्रीय नेता हैं।''

''महात्मा के घर में शराब पीना कम पुण्य नहीं है।''

''बिना स्याही के पेन की तरह ही शोभा बहुत देखता हूँ वन महोत्सव में समारोह पूर्वक, फोटो में खिंचकर हार पहिनकर मन्त्री एक पौधा लगाता है और महीने भर में सुख जाने दिया जाता है। दानदाता हाथों में गेहूं भरकर फोटो खिंचाता है, तब दाना भिखारी की झोली में डालता है। नेता श्रमदान करने के वक्त सड़क पर गेंती हाथों में थामे खड़ा रहता है। जब कैमरा क्लिक करता है तब गेंता जमीन पर पटककर रूमाल से हाथ पोंछ मोटर में बैठकर चल देता है।''

''जनता कहती है– नहीं, हमें यह सरकार नहीं चाहिए। हम सरकार बदलेंगे। हमें वह सरकार चाहिए, जो हमें भूखा रखें।''

निबन्ध ''बेईमानी की परत'' का एक उपदेशपरक वाक्य देखिए जिसमें उपदेश रूपी लक्षणा मौजूद है –''यह मलमूत्र की खान, यह गन्दा शरीर मिथ्या है, नाशवान है, क्षणभुगुंर है। मूर्ख इसे स्वादिष्ट पकवान खिलाते हैं, इस सजाते हैं, इस पर इत्र चुपड़ते हैं। वे भूल जाते हैं कि एक दिन यह देह मिट्टी में मिलेगी और इसे कीड़े खायेंगे। इतने में एक सेवक केसरिया रबड़ी का गिलास लाया और स्वामी जी ने उसे गटक लिया।''

मेरे मन में शंका उपजी। पर पास में बैठे एक भक्त ने समझाया – ''यह मत समझ लेना कि स्वामी जी स्वादिष्ट रबड़ी खाते हैं। अरे, वे कीड़ों–मकोड़ों के खाने के लिए देह को पुष्ट और स्वादिष्ट बना रहे हैं। इस मृत देह को कीड़े खायें तो उन्हें भी मजा आ जाय – यही सोचकर स्वामीजी रबड़ी पीते हैं।''

''सफल डाक्टर वह है जो मरीज को न मरने दे पर इलाज चलता रहे। सफल वकील वह है जो मुव्वकिल को न जीतने दे न हारने दे बस मुकदमें चलते रहें।"

ऐसे अनेक उदाहरण भरे पड़े हैं जो परसाई जी की लक्षणा शक्ति को प्रकट करता है।

- **व्यंजना शब्द शक्ति**–अभिधा और लक्षणा द्वारा अपना–अपना अर्थ बोध न करके शान्त हो जाने पर जिसके द्वारा अन्य अर्थ का बोध होता है, उसे व्यंजना शब्द शक्ति कहते हैं अर्थात व्यंग्यार्थ की प्रतीति होती है, यह अर्थ और शब्द दोनों द्वारा सम्भव है। जिस उक्ति का अभिप्रायरू अभिधा द्वारा ज्ञात होने वाले मुख्यार्थ या उस मुख्यार्थ में बाधा पड़ने पर लक्ष्यार्थ से भी स्पष्ट नहीं होता उसके आशय को प्रकट करने के लिए उसमें छिपे हुए किसी विशेष अर्थ का सहारा लेना पड़ता है। इस छिपे हुए (व्यंग्य) अर्थ का बोध कराने वाली शब्द शक्ति ही व्यंजना है जैसे–

  ''मीत तुम्हारे बदन पर मुरखता दरसात।

  मनमुख दरपन विमल है, आज विदित यह ज्ञात।।''

  परसाई की व्यंजना देखिए जो ढोंगी उपदेशक पण्डित के द्वारा व्यक्त होती है और जनता कितनी तन्मयता से सुनती है–

  ''नागरिकों यह जगत ही मिथ्या है। पानी का बुलबुला है। यहाँ का सुख, ऐश्वर्य, धन, दौलत सब झूठा है। अरे यह माया जो आत्मा को बन्धन में जकड़े रहती है। इस माया को त्यागो और परमात्मा को पा जाओगे।''

''धन हमेशा आदमी को बुरे मार्ग पर ले जाता है। यह अभागा स्वर्णगुप्त तो नर्क का कीड़ा है। और तुम हीरे हो हीरे। कैसे चमक रहे हो। धन से श्राब से, जुआ, व्यभिचार, अत्याचार ही तो है जो नर्क ले जाते हैं। क्या कहना गरीबी का अरे गरीब तो साक्षात् भगवान का स्वरूप है।''

''पवित्रता का यह हाल है कि जब किसी मन्दिर के पास से शराब की दूकान हटाने की मांग लोग करते हैं, तब पुजारी बहुत दुखी होता है। उसे लेने के लिए दूर जाना पड़ेगा। यहाँ तो ठेकेदार भक्तिभाव में कभी–कभी मुफ्त की पिला देता है।''

सार संक्षेप में यही कह सकते हैं कि परसाई जी की शब्द योजना एक उत्कृष्ट तथा सफल अभिव्यक्ति की कड़ी है। प्रत्येक बात को कहने में उन्हें इन शब्द शक्तियों का सहारा आवश्यक हो जाता है। विशेषकर व्यंजना शक्ति का, क्योंकि परसाई के प्रत्येक निबन्ध कहानी, उपन्यास, संस्मरण, रेखाचित्रों में व्यंग्य की प्रखरता और कचोट मौजूद है।

वाक्य–विन्यास एवं वाक्य रचना

मानव के विचारों की पूर्ण भावाव्यक्ति वाक्य द्वारा होती है। वाक्य एक ऐसे सार्थक शब्द– समूह को कहते हैं कि जिसके द्वारा लेखक अथवा वक्ता अपना पूर्ण विचार व्यक्त कर सके।

डॉ. देवेन्द्रनाथ शर्मा – ''पूर्ण अर्थ को प्रतीत कराने वाले शब्द समूह को वाक्य माना जा सकता है।''

डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार–''वह अर्थवान ध्वनि–समुदाय जो पूरी बात या भाव की तुलना में अपूर्ण होत हूए भी व्याकरणिक दृष्टि से अपने आप में पूर्ण हो जिसमे प्रत्यय या परोक्ष रूप से क्रिया का भाव हो वाक्य कहलाता है।''

सामान्यतरू रचनाकार अपनी रचनाओं में वाक्य प्रयोग बड़ी कुशलता से करता है। वाक्य पदों में निर्मित होते हैं किन्तु पदों का मनमाना प्रयोग वाक्य का निर्माण नहीं कर सकता है। वाक्य निष्पति पद से होती है किन्तु इसके लिए चयन क्रम और अपरिवर्तन की आवश्यकता पड़ती है। व्याकरण में वाक्य का अध्ययन अनिवार्य है। सभ्यता का ज्यों–ज्यों विकास होता गया, वाक्यों के विकास में भी वृद्धि होती गई। क्योंकि मनुष्य के भाव या विचार की पूर्ण अभिव्यक्ति वाक्यों में ही होता है। शब्द तो साधन हैं जो वाक्य की रचना में सहायक होते हैं। शब्दों का अस्तित्व वाक्य में ही होता है। वाक्य – विन्यास के अभाव में लेखक केवल शब्द संकेतो से बातचीत करता होता हैं। शिक्षितों के वाक्य विन्यास में एक प्रकार की सुव्यवस्था होती है जो व्याकरण के नियमों के अनुसार अनुशासित होती है। वह जैसा जब चाहे शब्दों और वाक्यों का प्रयोग कर सकता है।

- **वाक्य विन्यास**–परसाई जी ने अपनी रचनाओं में वाक्य – विन्यास के द्वारा अपनी सुक्ष्म – निरीक्षण शक्ति उच्च प्रतिभा प्रज्ञा कल्पना की मशाल देते हैं। इनके निबन्धों की इति बड़ी ही मार्मिक ढगं से हेती है। जिनमे उनके वाक्यों का प्रयोग कुशलता के साथ करने का साहस सामने आता है। इन्होनें परिणाम और गुण की दृष्टि से व्यंग्य के उच्च–स्तर पर ले जाने का कार्य किया है। मार्मिकता की अभिव्यंजना देखिए–

''प्रेमचन्द जयन्ति लगभग पूरी हो चुकी है। जैनेन्द्र ने चादर उतारकर बक्से में रख दी है। जतन से ओढी थी और जस की तस धर दी। यह चदरिया वे प्रेमचन्द को ओढ़ाना चाहते थे, मगर प्रेमचन्द फुर्ति से खिसक गये।''

''शैली के अन्तर्गत भी वाक्य – विन्यास अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तथा साथ ही शब्द क्रम और स्पष्ट तथा तर्कयुक्त अभिव्यंजना का सतत् ध्यान रखना चाहिए। लेखकों को यह समझ लेना चाहिए कि व्याकरण तथा तर्क की दृष्टि से शुद्ध भाषा लिखना ही पर्याप्त नहीं है यह तो कोई भी कर सकता है परन्तु श्रेष्ठ लेखक वो ही हो सकता है जो भव्य तथा ओजपूर्ण भाषा लिखें। भव्यता तथा ओज लाने के लिए वाक्यों के बीच पदों का भी प्रयोग होना चाहिए। उस प्रयोग मे सामंजस्य लय तथा संतुलन को पूर्ण प्रकाश मिलना चाहिए। बहुत से साधारण तथा प्रचलित शब्द नवीन प्रसगों में प्रयुक्त होकर अत्यन्त रोचक और आकर्षक हो जाते हैं और उसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि यदि किसी श्रेष्ठ गद्य लेखक की रचना में वाक्य – विन्यास उलट दिया जाए तो प्रचलित शब्द और प्रसंग विशेष को हटाकर दूसरे प्रसंग में प्रयुक्त किए जाये तो भाषा निष्प्राण हो जायेगी और शब्द श्री विहीन।''

परसाई ने अपने निबन्धों के विश्लेषण के बाद बताया है कि मानव चिन्तन का आरम्भ वाक्य में ही हुआ है और उसकी चरम अभिव्यक्ति भी वाक्य में होती हैं। अनेक विद्वानों ने परसाई के वाक्य–विन्यास की प्रशंसा की है तथा स्वयं की रचनाओं मे वाक्य – विन्यास को महत्वपूर्ण माना है–

''वाक्य एक अखण्ड शब्द है। वास्तव में भाषा का आरम्भ वाक्य से ही हुआ है।''

''वाक्य ही चिन्तन एवं अभिव्यक्ति का चरम तत्व है।''

वाक्य अभिधा, लक्षणा या व्यंजना प्रधान हो सकता है।

''वाक्य के लिए व्यंजना का ही महत्व अधिक है इस प्रकार व्यंजनात्मक वाक्य उत्कृष्ट शैली का उदाहरण है।''

''आचार्य विश्वनाथ ने रस को व्यंग्य की आत्मा के सर्वोच्च पद पर जो प्रतिष्ठा की है उसका मेरुदण्ड भी वाक्य ही माना है। वाक्य रसात्मक काव्य उसकी विख्यात उक्ति है।''

अपने साहित्य में समीकृत वाक्यों का प्रयोग लेखक के रचना कौशल का प्रतीक है। इसी से वाक्य में आदि से अन्त तक गठन, संगति तथा आगे बढ़ने की प्रेरणा रहना आवश्यक है। शैली के गर्भ को आत्मसात कर लेने वाला लेखक सर्वाधिक महत्वपूर्ण वाक्यांश को प्रारम्भ में प्रस्तुत करके वाक्य के शेष अंश में उसी की पुष्टि कर उस अंश का प्रतिपादन करता है अथवा प्रारम्भ के अशं में अत्यन्त सुदृढ़ता से प्रस्तावना रखकर पाठक की अर्थ, उत्सुकता को बनाये रखकर वाक्य के मुख्य अंश को अंत में उपस्थित वाक्य करके वाक्य रचना को सशक्त करता है।

- **वाक्य रचना**–वाक्य में शब्दक्रम को तोड़कर व्यंग्यकार नवीन वाक्य सृष्टि द्वारा शैलीय सौन्दर्य निर्मित करते हैं। डॉ. सुरेशकुमार के अनुसार–''शैलीय प्रभाव की निष्पति के लिए विषर्यय करने से जो नवीन शब्दक्रम बनता है, वह चरित्र चित्रण वस्तुवर्णन आदि के संदर्भ में श्रुति मधुरता, बलात्मकता, व्यंग्य, विविधता, चित्रात्मकता आदि अनेक प्रकार के प्रभावों की सृष्टि करता है।''

इसी कारण व्यंग्यभाषा जो परसाई के लेखन का आधार है, सरल मिश्रण और संयुक्त वाक्यों की परम्परागत प्रस्तुति के समानान्तर नई वाक्य सर्जना को इंगित करने वाला शब्द क्रम दिखता है। इन्होंने अपनी रचनाओं रचना के आधार पर मौजूद तीनों प्रकार के वाक्यों भेदों का प्रयोग किया है।

अलंकार और अप्रस्तुत विधान

अलंकार काव्य की शोभा तो बढ़ाते ही है साथ ही साथ गद्य में अलंकारो का प्रयोग करना एक बहुत बड़ी उपलब्धता होती है। बिना अलंकार के परसाई जी का लेखन आभुषणहीन स्त्री के समान लगता है।

व्यंग्य प्रयोग की दृष्टि से परसाई जी में श्लेष, वक्रोकि, उपमा, रूपक प्रतीप आदि अलंकारो की छटा देखने को मिलती है। इन अलंकारों का प्रयोग सौन्दर्य निर्माण के लिए नहीं हुआ है, बल्कि इनके प्रयोग से व्यंग्य की मारक शक्ति को और भी अधिक बढ़ाया गया है। परसाई जी के 'अकाल– उत्सव' शीषर्क निबन्ध में उपमा का प्रयोग द्रष्टव्य है–''दरारों वाली सपाट सूखी भूमि नपुंसक पति की सन्तानेच्छु पत्नी की तरह बेकाल नंगी पड़ी है।''

निबन्ध–छुट्टी वाला शोक में वक्रोक्ति अलंकार का जबरदस्त प्रयोग और प्रहार देखिए–

''पर मातृभूमि के एक स्तन में दूध हैं, दूसरे में जहर। ये जहर वाले स्तन से लगे है। कभी बच्चा दूसरे स्तन की ओर मुहँ बढ़ाता है, तो थप्पड़ पड़ जाता है।''

मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग

परसाई जी ने अपनी भाषिक संरचना के अन्तर्गत मुहावरों, कहावतों और लोकोक्तियों तथा सूक्तियों का प्रयोग अपनी भाषा शैली को रोचक बनाने के लिए किया है। भाषा के सौन्दर्य को बढ़ाने के लिए तथा कथन को अधिक प्रभावशाली, आकर्षक लोकोक्ति, कहावतें, मुहावरों एवं शेर और शायरी का प्रयोग करके श्अर्थश चमत्कार द्वारा व्यंग्य को सम्प्रेषण के द्वारा चमत्कार तथा रोचकता को जन्म दिया है। इनकी कला, व्यंग्य, लतीफों सरल मुहावरेदार वाणी, युक्ति और तर्क से निखरी हुई है। वह हास्य और करुणा को मिला देने की क्षमता रखते हैं।

''उनके द्वारा रचित लतीफों से हँसते–हँसते लोट–पोट हो जाते हैं पर अचानक बेसुध होने से पूर्व दिमागी तौर पर चौकन्ना हो जाता है। प्यार से की गई यह शल्य क्रिया परसाई की लेखन कला का गुण है। पत्रकार की सी रात–दिन की सार्थकता उनकी आदत है।''

क्रान्तिकारक विचारधारा के धनी परसाई जी ने सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन के प्रखर समीक्षक है। उनकी रचनाओं मे व्याप्त मुहावरें समाज की सच्चाइयों से बंधे हुए है। सामन्तवादी जीवन मूल्यों के प्रभाव तथा उच्चवर्गीय इतिहास के दबावो के कारण उत्पन्न जीवन व्यवहार को उनके सूत्र, लोकोक्ति, मुहावरें, कहावतें खोलते जाते हैं।

व्यंग्य कौशल की दृष्टि से प्राचीन और नवीन कहावतों एवम मुहावरों का भी बहुतायत के साथ प्रयोग किया गया है। आवश्यकतानुसार लोकजीवन में प्रचलित लघु कथाओं तथा विभिन्न उद्धरणों में चुटीलापन लाने के लिए इन शैलीय उपकरणों का अच्छा खासा प्रयोग किया है।

इनके निबन्धों की यह विशेषता है कि भाषा के अत्यन्त सरल और सुबोध होते हुए भी इनमें बीच–बीच में गजब की वक्रता दिखाई देती है।

शब्द और वाक्य, अर्थ और लय, मुहावरे और लोकोक्ति सादृश्य और विचलन जैसे सभी भाषा–शिल्प के उपकरण व्यंग्य भाषा की बुनावट को विस्तृत और सूक्ष्म फलक प्रदान करते हैं। भाषा की कसावट, संगीत और व्यंजकता को प्रभावी व्यंग्य के साथ जोड़कर ये शैलीय उपकरण एवं सौन्दर्य मंडित आकार प्रदान करते हैं।

परसाई जी ने आधुनिकता के अनुरूप ही भाषा को सजाय–संवारा गया है। संस्कृत के तत्सम, तदभव, देशज और विदेशी शब्दों के प्रयोग के साथ अंग्रेजी शब्दों का भी खुलकर प्रयोग किया है। इसके साथ ही अनेक प्राचीन और नवीन लोकोक्तियों, मुहावरों, कहावतों, शेर–शायरियाँ, सूक्तियाँ–उक्तियाँ, शब्द शक्तियों, बिम्बों, प्रतीकों, वाक्य सूत्रों के साथ ही साथ हिन्दी अंग्रेजी मिश्रित वाक्य खण्डों के प्रयोग, अनुप्रास, श्लेष, उपमा और रूपक का मोह तथा विभिन्न अप्रस्तुतों का प्रयोग इनके निबन्धे की अनोखी विशेषताएँ है। भाषा–शिल्प व शैली की इन्हीं विशेषताओं के कारण आज परसाई का व्यंग्य लेखन सर्वाधिक लोकप्रिय होता जा रहा है। परसाई की भाषिक संरचना एक अद्‌भुत कलात्मक अभिव्यक्ति का उत्कृष्ट नमूना है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिन्दी व्यंग्य के प्रतिमान–डॉ. बा. शे. तिवारी पृ. 105
2. हिन्दी के व्यंग्य निबन्ध–डॉ. आनन्द प्रकाश गौतम पृ. 148
3. हिन्दी व्यंग्य के प्रतिमान–डॉ. बा. शे. तिवारी
4. हिन्दी भाषा का रचनात्मक व्याकरण 5. परसाई रचनावली भाग–2 पृ. 12
5. साहित्यिक निबन्ध–राजनाथ शर्मा–यज्ञदत्त शर्मा पृ. 41–1985 पृ. 32
6. सामान्य हिन्दी व्याकरण और रचना–डॉ. चातक पृ. 15
7. बेइमानी की परत–पृ. 48
8. अपनी–अपनी बीमारी–ह. श. प. पृ. 37
9. हिन्दी का स्वा. हास्य और व्यंग्य–डॉ. बा. शे. तिवारी
10. आलोचना का इतिहास–डॉ. एस. पी. खत्री
11. आलोचना–जनवरी–मार्च 1968
12. पाखण्ड का अध्यात्म पृ. 9
13. परसाई रचनावली भाग–4 पृ. 263
14. परसाई रचनावली भाग–2 पृ. 259

15. वैष्णव की फिसलन पृ. 80
16. बेइमानी की परत –ह. श. प. पृ. 74
17. अपनी–अपनी बीमारी –ह. श. प. पृ. 127
18. परसाइ रचनावली भाग–3 पृ. 45
19. बेइमानी की परत पृ. 111
20. परसाई रचनावली भाग–2 पृ. 206
21. परसाई रचनावली भाग–4 पृ. 294
22. अपनी–अपनी बीमारी पृ. 131
23. जैसे उनके दिन फिरे पृ. 35
24. वैष्णव की फिसलन पृ. 13 48. कहत कबीर पृ.6
25. अपनी–अपनी बीमारी पृ. 123
26. परसाई रचनावली भाग–4 पृ. 306
27. बेइमानी की परत पृ. 51
28. परसाई रचनावली भाग–2 पृ. 200
29. भाषा विज्ञान–भोलानाथ तिवारी
30. पाखण्ड का अध्यात्म पृ. 17
31. साहित्य दर्पण–आचार्य विश्वनाथ पृ. 19
32. आलोचना का इतिहास–डॉ. एस. पी. खत्री पृ. 99
33. अर्थ विज्ञान और वाक्य दर्शन–डॉ. कपिल देव द्विवेदी पृ. 315
34. काव्यालंकार सूत्र–आचार्य वामन पृ. 316
35. हिन्दी काव्य शास्त्र का इतिहास–डॉ. भागीरथी मिश्र पृ. 317–318
36. द्विवेदी युग की हिन्दी गद्य शैलियों का अध्ययन–डॉ. शंकर दयाल पृ. 80
37. शैली विज्ञान और प्रेमचन्द की भाषा–डॉ. सुरेश कुमार पृ. 163
38. परसाई रचनावली भाग–2 पृ. 302
39. शिकायत मुझे भी है पृ. 322 1985
40. आई बरखा बहार, परसाई रचनावली पृ. 195
41. अपनी–अपनी बीमारी पृ. 27
42. परसाई रचनावली भाग–3 पृ. 7
43. वैष्णव की फिसलन पृ. 14
44. शिकायत मुझे भी है पृ. 80
45. बेइमानी की परत पृ. 67 103. वहीं पृ. 67
46. शिकायत मुझे भी है पृ. 103
47. वैष्णव की फिसलन पृ. 18
48. साहित्यिक निबन्ध–राजनाथ शर्मा पृ. 387

49. बेइमानी की परत पृ. 3
50. परसाई रचनावली भाग–3
51. वैष्णव की फिसलन पृ. 75
52. कहत कबीर पृ. 182
53. बेइमानी की परत पृ. 74
54. कहत कबीर पृ. 188
55. वैष्णव की फिसलन पृ. 110
56. कहत कबीर पृ. 111
57. वैष्णव की फिसलन पृ. 79
58. कहत कबीर पृ. 147
59. वैष्णव की फिसलन पृ. 91
60. कहत कबीर पृ. 55
61. शिकायत मुझे भी है पृ. 131

❖◆❖